Hanuman Aarti

श्रीहनुमान्‌जीकी आरती

NityaPaath
nityapaath.com/hanuman-aarti/

REFRAIN · टेक

टे॰ आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की॥

VERSES · आरती

1 जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग-दोष जाके निकट न झाँपै॥ १॥

2 अंजनि पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई॥ २॥

3 दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सीय सुधि लाये॥ ३॥

4 लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥ ४॥

5 लंका जारि असुर संहारे। सियारामजीके काज सँवारे॥ ५॥

6 लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्रान उबारे॥ ६॥

7 पैठि पताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे॥ ७॥

8 बायें भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे॥ ८॥

9 सुर नर मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे॥ ९॥

10 कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई॥ १०॥

11 जो हनुमान (जी) की आरति गावै। बसि बैकुंठ परमपद पावै॥ ११॥

Text checked against: Gita Press, Gorakhpur: Shri Hanuman Chalisa (code 227). Meanings, audio and all scripts at nityapaath.com/hanuman-aarti/